[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3585

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय चित्रकला में रंगों का योगदान (अब्दुर्रहमान चुगताई के विषेष संदर्भ में)

डॉ0 नाजिमा इरफान
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग
आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ

मानव जीवन में वर्ण का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक वस्तु कोई न कोई रंग लिये हुए है। रंगों के प्रति मानव का आकर्षण कभी घटा नही है। इसीलिये आदि मानव से लेकर आधुनिक मानव तक ने सौन्दर्य के विकास में वर्ण का सहारा लिया है। कमरे की रंग व्यवस्था से लेकर बाग बगीचों में फूल पौधों की रंगयोजना तक में कलाकार ने अपना हस्तक्षेप किया है क्योंकि रंगों का अपना एक प्रभाव होता है जो मानव की मानसिक भावनाओं को उद्वेलित करने की शक्ति रखता है। वर्ण सार्वभौमिक है तथा चित्रकला में सबसे अधिक महत्व रंग को दिया जाता है।

रंगों के विविध रुपों में मन की भावनायें जुड़ी हैं जैसे बसन्त का रंग नारंगी, मेघ का नीला, दीपक का पील, श्री का हरा, मालाकोश का काला और भैरव का सफेद जो चित्रों के आधार बने। अजन्ता काल से ही कलाकार रंग के प्रति सजग हो गया था। रंग जो अजन्ता में इतना उभार नहीं पा सके थे वे राजस्थानी व पहाड़ी कलम में अपनी पूर्ण चटख मटक के साथ फूट पड़ते हैं तथा यूरोप के अभिव्यंजनावाद व फावीवाद की तरह अभिव्यक्तिपरक हो गये। अजन्ता युग से लेकर जैन कला से होती हुई 16वीं शताब्दी तक इस परम्परा का विकास होता रहा। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भारतवर्ष में जो चित्रकला उपजी वह पाश्चात्य कला का अनुकरणमय ही रही और वह भी बहुत मध्यम श्रेणी की। आधुनिक भारतीय चित्रकारों में रंग पर खोज करने वाले कलाकारों में अवनीन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बोस, क्षितिद्रनाथ मजूमदार के नाम सामने आते हैं। बंगाल शैली के चित्रकारों की श्रृंखला में एक नाम अर्ब्दुरहमान चुगताई है जिनके चित्रों की सफलता में वर्ण योजना अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आपकी रंग योजना के बारे में आलोचक व समीक्षक भी अपने तथ्य रखते हैं। पाकिस्तान के समकालीन राष्ट्रपति मुहम्मद अय्यूब खान ने आपके चित्रों में रंगों के जादू का अनुभव किया है।[3] अब्दुर्रहमान चुगताई का जन्म लाहौर में 21 सितम्बर सन् 1897 ई0 को हुआ था।[4] इनका सम्बन्ध इस्लामी परिवार करीम बख्श मेमार के परिवार, जो मौलिक रुप से हिरात के निवासी थे, जो अफगानिस्तान में है। परन्तु मुगल काल में भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन के समय यह परिवार हिरात से प्रवास कर लाहौर में आ बसा। अब्दुर्रहमान चुगताई का जीवन एक कलाकार की तरह 1915 ई0 में शुरु हुआ। चुगताई की कला स्वयं से उत्पन्न कला साधना है जिसमें रंगों का महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी कला में आन्तरिक कल्पना का वैभव पूर्णतः अभिव्यंजित हुआ है। आपकी कला साधना स्वतः प्रेरित ही थी। प्रत्यक्षदर्शी चुगताई के चित्रों में रंगों के मिश्रण को आश्चर्य से देखते हैं। आपकी वर्ण योजना में भावव्यंजना और संगीतमय दृढ़ता के कारण चित्र में जादुई प्रभाव आ गया है। चुगताई के चित्रों के रंग आपकी कलात्मक ध्येय के साथी हैं। रंगों का अपना एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। चुगताई पीले और हरे रंग के प्रभाव को समझते हैं। नीले रंग के प्रति आपका स्नेह और लाल रंग का प्रयोग आपके आकर्षण को दर्शाता है। सच्चाई यह है कि चुगताई के रंग हमेशा सादे और प्रत्यक्ष हैं तथा प्रत्यक्षदर्शी की सौन्दर्य चेतना को तृप्त करते हैं। रंगों का सुकुमार मिश्रित वातावरण उनके चित्रों में गहराई पैदा करता है, जिसका रहस्यमय भाव कविता और प्रतीकवाद के अनुरुप होता है। चुगताई के चित्र इस बात का प्रमाण हैं कि आपने चित्रों में रंगों के सामन्जस्य पर पूर्ण ध्यान दिया है। चुगताई अधिकतर रंगों को प्रयोग करते थे किन्तु हमेशा नये पद प्राथमिक से व स्वतन्त्रता से। चुगताई का रंगों को प्रयोग करने का तरीका अपने आप में प्रवीण था। आपकी रंग योजना चित्र में भावों को सूक्ष्मता से शक्ति प्रदान करती है। चुगताई के चित्र तथा उनकी आकर्षित करने वाली वर्ण योजना और भावात्मक रंगों के उतार चढ़ाव आत्मा को एक उल्लास से भर देते हैं। चुगताई ने अपने चित्रों में वर्ण को गौण न मानकर महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वर्ण विचारों तथा भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। चुगताई ने वर्ण का प्रयोग चित्र में अपने विचारों व भावों को सुन्दरतापूर्वक व्यक्त करने के लिये किया है। समकालीन कला में वर्ण को अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन स्वीकार किया गया है। आपने अपने चित्रों में चटख के साथ धूमिल तानों का प्रयोग भी किया है जिससे इनके चित्रों में एक प्रकार का सूफियाना पन प्रतीक होता है। अब्दुर्रहमान चुगताई ने प्रायः लाल, पीली, नीली व हरी रंगत का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। कहीं–कहीं चित्र में एक रंगत की अनुभूति कराने के लिये चुगताई ने एक इच्छित रंगत का वाश चित्र बनाने के अन्त में सम्पूर्ण चित्र पर लगाया है, जिससे चित्र एक रंगत की आभा में डूब गया है।

वर्ण का स्वयं कोई अस्तित्व नहीं होता है क्योंकि वह तो प्रकाश का गुण है परन्तु वह तो रुप की प्रशंसा के लिये स्वयं को समर्पित कर देता है। चुगताई ने अपने चित्रों में रंगों के आकर्षण व भावों का समावेश करने के लिये कठिन परिश्रम किया है। विशाल व्यक्तित्व से पूर्णित यह व्यक्तित्व जिसने रंगों से युक्त जीवन को जिया तथा कला के क्षेत्र को विभिन्न उपलब्धियों से सुसज्जित किया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अब्दुर्रहमान चुगताई भारत के महत्वपूर्ण कलाकारों में से है। आपने आधुनिक

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय कला के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चुगताई की कला क्षणिक भावों को उत्पन्न नहीं करती है बल्कि सौन्दर्यशास्त्र के परम आनन्द की उत्पत्ति कराती है। अब्र्दुरहमान चुग़ताई ने अपने बहुत से चित्रों में रंगों की धूमिल तानों का प्रयोग किया है। इससे चित्र में एक प्रकार सूफियाना पन सा प्रतीत होता है। इस प्रकार के चित्रों में ''द यंग पोएट'' ''फूलावसे ऑफ यस्टरडे'' ''ए सरनाडे'' ''द यंग हरमिट'' व ''सुकुट–ए–शब'' आदि उल्लेखनीय है। इस प्रकार के अन्य चित्रों में भी चुग़ताई ने धूमिल तानों का प्रयोग किया है, जिनसे चित्रों में धुंधलापन सा प्रतीत होता है, जो एक अलग प्रकार का प्रभाव अभिव्यक्त करता है तथा चित्र में शान्ति का अनुभव कराता है। दर्शक भी चित्र का रसास्वादन शान्त रस के साथ करता है।

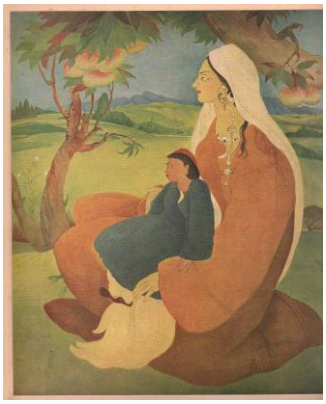

अब्र्दुरहमान चुग़ताई ने अपने चित्रों में भड़कीले व चमकदार रंगों का प्रयोग भी किया है। इससे चित्र में चमक का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के चित्रों में प्रारम्भिक रंगों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। इस संदर्भ में चित्रों में ''टयूलिप ऑफ काश्मीर'' ''द डैजर्ट इन ब्लूम'' ''डॉटर ऑफ द हरम'' ''ल्यूरा व गैम्बलर'' ''फ्री बर्डस'' ''रिफलैक्शंस'' आदि उल्लेखनीय चित्र हैं। अब्दुर्रहमान चुग़ताई ने वर्ण योजना के अन्तर्गत कुछ चित्रों में सम्पूर्ण चित्र को रंग की एक ही तान की अनुभूति से आच्छादित किया है। इस प्रकार के चित्रों में ''ऊषा'' ''द ब्राइड''ये ''डांसिंग गर्ल्स'' ''टू लवर्स'' आदि का स्मरण दर्शनीय है। चित्र ''टू लवर्स'' में चित्रकार ने सम्पूर्ण चित्र को हरी रंगत से आच्छादित किया है। हरी रंगत चित्र में प्रयुक्त प्रत्येक रंगत पर अपना प्रभाव डाल रही है। हरा रंगत नीले रंग की विशेषताओं से युक्त रंगत है। यह तटस्थ एवं निष्क्रिय होने से सर्वाधिक विश्रान्तिदायक माना जाता है। यौवन एवं अमरता इस रंगत से जुड़े अन्य प्रभाव है। हरा रंग शीतलता, स्फूर्ति तथा पुनर्जीवन की ज्योति जगाता है, बलवर्धक है, नवशक्ति संचारक होता है। इस रंग से न तो मन में बहुत घबराहट ही पैदा होती है और न दिल की सुस्ती ही देखने को मिलती है। इस कारण यह रंग शान्ति का द्योतक है। शीत प्रकृति का रंग होने से शरीर तथा मन की चंचलता और बेचैनी को दूर भगाता है। यह लुभाने वाला, मन को स्वच्छ करने वाला होता है।

इस प्रकार चित्र ''द ब्राइड'' में चुग़ताई ने सम्पूर्ण चित्र को लाल रंग से ढका है। यह सर्वाधिक सघन एवं आकर्षक रंगत है। आदिम शास्त्रीय कलाओं में इनका पर्याप्त व्यवहार देखा जाता है। यह सक्रिय एवं उत्तेजक रंगत है। प्रायः लाल रंग को आवेश, साहस, प्रेम, संघर्ष तथा संकट का सूचक माना जाता है। मनुष्य के मन पर इससे अधिक गहरा प्रभाव और किसी दूसरे रंग का नहीं होता। चित्र ''ऊषा'' में पीली रंगत का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है। यह अत्यधिक प्रकाशपूर्ण रंगत है। स्वच्छ, चटकीली, पीली रंगत सूर्य के प्रकाश का प्रतीक है तथा इससे आनन्द, जीवन एवं स्फूर्ति का द्योतक माना जाता है। इससे पवित्रता, ज्ञान तथा धार्मिकता का बोध होता है। इसलिये धार्मिक मनुष्य पीला रंग पसन्द करते हैं। ईश्वर, देवी देवताओं अधिकतर पीला वस्त्र ही पहनाया जाता है। पीले रंग से मन का पाप, अधर्म, अशान्ति तथा रोग भागते हैं। पीले रंग से रक्त संचार में गति उत्पन्न होती है। जिससे बदन में स्फूर्ति आती है।

अब्दुर्रहमान चुग़ताई ने प्रायः लाल, पीली, नीली व हरी रंगत का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। कहीं–कहीं चित्र में एक रंगत की अनुभूति कराने के लिये चुग़ताई ने एक इच्छित रंगत का हल्का वाश चित्र बनाने के अन्त में सम्पूर्ण चित्र पर लगाया है, जिससे चित्र एक रंग की तान की आभा में डूब गया है।

चुग़ताई ने रंगों का प्रयोग आकर्षक व त्रुटिरहित किया है तथा आपका कार्य प्रभावशाली भी बन पड़ा है। रंगों के प्रयोग में दक्ष होने के बावजूद चुग़ताई ने अपने चित्रों में रंगों को द्वितीय स्थान दिया है। आपने अपने चित्रों में रेखा, के प्रयोग को प्रथम स्थान दिया है। चुग़ताई ने रेखांकन पर बहुत अधिक बल दिया है तथा यही आपके चित्रों की मुख्य विशेषता बन गई है। यद्यपि चुग़ताई के चित्रों में वर्ण योजना का दूसरा स्थान है, तथापि चुग़ताई की वर्ण योजना प्रशंसनीय एवं दर्शनीय है।

सन्दर्भ सूची –

1 *Mohammad Ayub Khan, President Pakistan 1959, Bulletin Published by Chughtai, Museum Trust, Lahore, Pakistan*
2 *Manohar Kaul, Trends in Indian Paintings, Dhoomimal Ramchand, New Delhi, 1961, p. 122*
3 *Kandinsky, German Expressionist Paintings, National Gallery of Modern Art, Pub, 1982, p. 7*